

प्रकट होना 3. सहसा स्मरण आना 4. मन में कोई बात अचानक आना।

**स्फुरित** वि. (तत्.) 1. जिसका स्फुरण हो या जिसमें स्फुरण हो 2. फड़का हुआ या फड़कता हुआ 3. काँपा हुआ या काँपता हुआ, कंपित।

**स्फुलिंग** पुं. (तत्.) अग्निकण, चिंगारी।

**स्फुलिङ्गिनी** स्त्री. (तत्.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

**स्फुलिङ्गी** वि. (तत्.) जिसमें से स्फुलिंग निकलते हों या निकल रहे हों।

**स्फूर्ज** पुं. (तत्.) 1. बिजली गिरने की आवाज 2. इंद्र का वज्र, मेघ-गर्जन 3. अचानक होने वाला विस्फोट 4. नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसमें हर्ष के साथ भय भी मिला रहता है।

**स्फूर्जन** पुं. (तत्.) 1. मेघों का गर्जन या गड़गड़ाहट 2. विस्फोट 3. तिंदुक या तेंदू नामक वृक्ष।

**स्फूर्जा** वि. (तत्.) 1. स्फुरित 2. जो स्फूर्ति के कारण हुआ हो 3. मन में सहसा आया हुआ।

**स्फूर्ति** स्त्री. (तत्.) 1. धीरे-धीरे हिलना, फड़कना, स्फुरन 2. किसी काम या बात के लिए मन में होने वाला विचार का आकस्मिक आविर्भाव 3. तेजी-फुर्ती।

**स्फोट** पुं. (तत्.) 1. फूटना या फटना, विस्फोट, अंदर से भर जाने के कारण किसी वस्तु के ऊपरी आवरण का फटना और उसके भीतर की चीज का वेगपूर्वक बाहर निकलना 2. शरीर का फोड़ा 3. मन का वह भाव जो किसी शब्द को सुनने से मन में आता है भाषा. वर्णों से अभिव्यक्त शब्द या अर्थ का प्रकाशक शब्द, नित्य शब्द टि. 'नैयायिक' स्फोट को नहीं मानते। 'मीमांसक' और 'सांख्यवादी' दार्शनिक भी वैयाकरणों के 'स्फोट' को अस्वीकार करते हैं योगदर्शन के सूत्रकार पतंजलि ने 'अखंडस्फोट' का प्रतिपादन किया है, व्याकरण दर्शन में 'वर्णस्फोट', 'पदस्फोट', 'अखंड वाक्य स्फोट' इत्यादि आठ स्फोटों की चर्चा है।

**स्फोटक** वि. (तत्.) स्फोट उत्पन्न करने वाला बम आदि, विस्फोटक पुं. शरीर पर होने वाला फोड़ा टि. संस्कृत में 'छोटा फोड़ा' अर्थात् फुंसी या फफोला/छाला को 'स्फोटिका' कहा जाता है और साँप के फैले हुए फन को 'स्फोट'।

**स्फोटन** पुं. (तत्.) 1. सहसा तड़कना, फटना 2. व्यक्त करना, सामने लाना, प्रकटीकरण 3. उँगली चटकाना 4. संयुक्त व्यंजन वर्णों का अलग-अलग उच्चारण।

**स्फोटवाद** पुं. (तत्.) ऐसा दार्शनिक मत या सिद्धांत जो सारी सृष्टि की उत्पत्ति स्फोट अर्थात् अनित्य दैवी शब्द से ही हुई मानता है।

**स्फोटा** स्त्री. (तत्.) 1. साँप का फन 2. सफेद अंतमूल।

**स्फोटिक** पुं. (तत्.) पत्थर, जमीन आदि तोड़ने-फोड़ने का काम।

**स्फोटिका** स्त्री. (तत्.) छोटा फोड़ा, फुंसी।

**स्फोरण** पुं. (तत्.) स्फूरण।

**स्मय** पुं. (तत्.) 1. आश्चर्य, विस्मय, ताज्जुब 2. अहंकार, अभिमान, घमंड।

**स्मर** पुं. (तत्.) कामदेव, मदन।

**स्मरकथा** स्त्री. (तत्.) शृंगार रस की बातें।

**स्मरकार** वि. (तत्.) काम-वासना उद्दीप्त करने वाला।

**स्मरकूप** पुं. (तत्.) भग, योनि।

**स्मरगृह** पुं. (तत्.) भग, योनि।

**स्मरचंड/स्मरचक्र** पुं. (तत्.) एक प्रकार का रतिबंध।

**स्मरण** पुं. (तत्.) 1. किसी ऐसी देखी-सुनी या बीती हुई बात का फिर से याद आना या ध्यान होना जो बीच में भूल गई हो या ध्यान में न रह गई हो, कोई बात फिर से याद आने की क्रिया या भाव 2. किसी के विषय में चिंतन/विचार 3. भक्ति के श्रवण आदि 9 प्रकारों में से एक, भक्त द्वारा परमात्मा या इष्टदेव का